12.00 कक्षा- कक्ष प्रक्रियाँ में लैंगिक विषमता
Gender Inequality in classroom
1.00 Process-

2.00 कक्षा-कक्ष में लैंगिक विषमता एक गंभीर विषय है, जो कि हमेशा मुख्यधारा
3.00 विषयक जनता द्वारा नजरअंदाज कर दिया जाता है। हालाँकि अभिभावक एवं
4.00 शिक्षाशास्त्री इस प्रकार की विषमता का असर बच्चों के भविष्य के प्रति सचेत
5.00 है एवं इनको रोकने के लिए जो भी आवश्यक कदम है उठा रहे है
6.00 हालांकि यह भी सर्वविदित है कि कक्षा-कक्ष में लैंगिक विषमता लड़के
7.00 एवं लड़कियों दोनों की अधिगम योग्यता पर अनेक दुर्भाग्य पूर्ण प्रभाव डालती है।

कक्षा- कक्ष प्रक्रियां में लैंगिक विषमता
Gender Inequality in classroom Process

Important Calls ✓ Things to Do ✓ Meetings ✓

अध्यापकों को अपने शिक्षण की योजना बनाने के दौरान बुद्धिमत्तापूर्ण इस बात पर दृष्टिपात कर लेना चाहिए कि क्या लड़के एवं लड़कियाँ आमतौर पर एकल लिंग समूह में किन बातों को पसंद करते हैं तथा किन बातों से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। इस प्रकार की विषमता आधारित समस्यों का कारण यह है कि वे उस समय लड़कों एवं लड़कियों को एक लिंग आधारित अथवा पाठ्यक्रम के अनुसार अलग-अलग ढंगों से पढ़ाते हैं।

गबरैडल लिविन्सन एवं पैट्रिसिया मर्फी में पाया है कि ब्रिटिश अध्यापक एक समान विषय-वस्तु को लड़कों एवं लड़कियों की कक्षा के अनुसार अलग-अलग तरीकों से पढ़ाते हैं एवं इस प्रकार दोनों लिंग विषय-वस्तु सम्बन्धी क्षेत्र पर निर्भर रहने की बजाय परिवर्तित हो जाते हैं।

कक्षा-कक्ष प्रवृत्तियों में लैंगिक असमानता के परिवर्जन हेतु व्यूह रचनाएँ ⟹

Strategies to Remove Gender Inequalities in classroom ⟹

लैंगिक समाजीकरण अधिगम की एक प्रक्रिया

Important Calls ✓ Things to Do ✓ Meetings ✓

JUL '19	M	T	W	T	F	S	S
	1	2	3	4	5	6	7
	8	9	10	11	12	13	14
	15	16	17	18	19	20	21
	22	23	24	25	26	27	28
	29	30	31				

है जहाँ पर छोटे बच्चे लिंग आधारित विशिष्ट मानदण्डों के अनुसार व्यवहार करना सीखते हैं, समाज में रहते हुए अक्सर यह निरीक्षण किया जाता है कि लड़कियों को खेलने के लिए अक्सर गुड़ियां दी जाती है। जब कि लड़कों को यांत्रिक खिलौनों के साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तथा विद्यालय निरंतर इन रूढ़िवादिताओं को पुनर्बलित कर रहे हैं कक्षा-कक्ष प्रक्रियां में लड़कों को किसी प्रोजेक्ट में प्रभुत्व भूमिका एवं प्रस्तुतीकरण के अधिकतम अवसर प्रदान किये जाते हैं। लेकिन हमारी मान्यता है कि एक अध्यापक के रूप में हमें इस बात को अवश्य समझना चाहिए कि लड़कों एवं लड़कियों में स्वाभाविक रूप से कोई "मनोवैज्ञानिक" एवं "बौद्धिक" अन्तर नहीं होता है।

यह समाज है जो उनमें इस अन्तर को पैदा कर देता है। यहां पर कुछ तार्किक वर्णित किये जा रहे हैं जिन की सहायता से एक अध्यापक कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में लैंगिक विषमताओं को दूर कर सकता है।

① अध्यापक द्वारा लड़को एवं लड़कियों के एकीकरण का प्रयास करना चाहिए तथा बैठने की व्यवस्था में उनको अलग करना चाहिए, क्यों कि यह अक्सर देखा जाता है कि लड़कियां हमेशा चर्चा आधारित पहल में संकोच का अनुभव करती है।
अध्यापक लड़कियों को चर्चा में भाग लेने के लिए जागरूक करें एवं परिचर्या में नेतृत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करें।

② सभी विद्यार्थियों में प्रोजेक्ट के समान रूप से वितरण के प्रयास करने चाहिए।
__For Exp__- लड़कियों को कृषि एवं अन्य उद्योग आधारित प्रोजेक्ट दिये जाने चाहिए। जब कि लड़कों को किचन की विभिन्न क्रियाओं में प्रयोग किए जाने वाले आवश्यक समान की सूची तैयार करने चाहिए एवं अपनी माता-~~पिता~~ के साथ-साथ घरेलू काम-काज में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

③ पाठ्य-पुस्तकें एवं अन्य दृश्य-श्रव्य सामग्री को लगातार चैक करना चाहिए कि कहीं उनमें रूढ़िवादिता के आधार पर पुरुषों को डाक्टर एवं महिलाओं को नर्सों के रूप में तो नहीं प्रतिपादित कर दिया गया है। साथ ही साथ.

Important Calls ✓ | Things to Do ✓ | Meetings ✓

बहादुरी के उदाहरणों का चुनाव करते समय अध्यापकों द्वारा यह प्रयास करने चाहिए कि सुविचारित ढंग से बहादुर महिलाओं के उदाहरण कक्षा-कक्षा में प्रयोग किया।